को छोडकर, हमारे उद्धार का कोई दूसरा रास्ता नहीं है। मैं जानता हूँ कि युद्ध एक तरह की बुराई है और शुद्ध बुराई है। मैं यह भी जानता हूँ कि एक दिन इसे बंद होना ही है। मेरा पक्का विश्वास है कि खूनखराबी या धोखेबाज़ी से ली गई स्वाधीनता, स्वाधीनता है ही नहीं। इसकी अपेक्षा कि मेरे किसी काम से अहिंसा का सिद्धांत ही गलत समझा जाय या किसी भी रूप में मैं असत्य और हिंसा का हामी समझा जाऊँ, यही हज़ारगुना अच्छा है कि मेरे विरुद्ध लगाए गए सभी अपराध अरक्षणीय, असमर्थनीय समझे जाएँ। संसार हिंसा पर नहीं टीका है, असत्य पर नहीं टिका है किन्तु उसका आधार अहिंसा है, सत्य है।[12]

वस्तुतः हम गांधी के अंतस की आत्मशक्ति को मान सकते हैं। वह युद्ध शून्य पृथ्वी की कल्पना करते हैं, किन्तु यह स्वीकार करना ज्यादा अच्छा है कि प्रेम, सत्य और अहिंसा मानव अधिकारों के संरक्षण हेतु सार्वभौम स्वीकृति हो सकती है, और इसकी शुरुआत और विस्तार हमें ही करना होगा।

****

सन्दर्भः-

1. यूएनजीए की आम बहस के समापन पर पीजीए की टिप्पणी, 26 सितंबर, 2022
2. https://news.un.org/hi/story/2022/01/1052402
3. https://news.un.org/hi/story/2020/01/1022012
4. https://news.un.org/hi/story/2022/01/1052462
5. Ibid
6. **Professor Nigel MacLennan, The Psychology of War,**
7. **https://www.psychreg.org/psychology-war/** 07 March 2022
8. Ibid
9. https://news.un.org/hi/story/2022/11/1064397
10. डॉ. राधाकृष्णन, पूरब और पश्चिम, अनु. रमेश वर्मा, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1981, पृ. 141
11. वही, पृ. 131
12. द्रष्टव्य: भूमिका, एक ही आवश्यक बात (महात्मा टॉलस्टॅाय की पुस्तक द वन थिंग नीडफुल), अनु. प्रो. श्री जगतनारायण लाल, रामदेव प्रसाद सिंह, मुरादपुर, पटना सन 1981 पृष्ठ- XXXVI
13. महात्मा गांधी, युद्ध और अहिंसा, सर्वोदय साहित्यमला 108वां ग्रंथ, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1941, पृष्ठ-192 द्रष्टव्य: हिन्दी 'नवजीवन', 20 सितंबर, 1928

पता: पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, भटिंडा (पंजाब), मो. 9818759757
ईमेल: hindswaraj2009@gmail.com या Kanhaiya.tripathi@cup.edu.in
वेबसाइट: www.kanhaiyatripathi.com

बुंदेलखण्ड़ क्षेत्र में बौद्ध मूर्ति शिल्पांकन

(छतरपुर,तेवर त्रिपुरी,के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. प्रमेश दत्त शर्मा
नगर निगम संग्रहालय,ग्वालियर (म.प्र.)

प्रस्तावना

बुंदेलखंड़ मध्य भारत का एक प्राचीन क्षेत्र है। भौगोलिक और संस्कृतिक विविधताओं के बावजूद बुंदेलखंड़ में जो एकता और समरसता है, उसके कारण ये क्षेत्र स्वय में अनूठा बन पड़ता हैं। राजनीतिक रूप से इसमें उत्तर प्रदेश के सात (07) जिले एवं मध्य प्रदेश के छः (06) जिले सम्मिलित है। बुंदेलखण्ड़ का इतिहास आरम्भ से गौरवशाली रहा है। बुंदेलखण्ड़ क्षेत्र में बौद्ध मूर्तिकला का आरंभ मौर्यकाल में अशोक के शासन काल से आरंभ होता है। मौर्य के उपरांत बौद्धमूर्ति कला के उदाहरण शुंग,सातवाहन, कुषाण,गुप्त, चंदेल, एवं कलचुरी काल में हमें बुन्देलखण्ड एवं उसके समीपस्थ क्षेत्र जैसे ़छतरपुर ,त्रिपुरा, दतिया, रीवा, सतना,पन्ना आदि स्थलों में देखने को मिलते हैं। भारत के पूर्वी क्षेत्र से भिन्न इस क्षेत्र के बौद्ध मूतिशिल्प में सौम्य रूप के दर्शन होते हैं। तेवर (त्रिपुरी),छतरपुर आदि क्षेत्रों के बौद्ध मूर्ति शिल्पाकंन इसके उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय उपमहादीप में भौगोलिक एवं जलवायु परिस्थितियों में इतनी अधिक विविधता विद्यमान है कि यहॉ के निवासियों एवं उनकी कला एवं संस्कृति में भी यह स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बुंदेलखण्ड भारतीय उपमहादीप का ऐसा ही भू-भाग हैं। बुंदेलखण्ड का ये क्षेत्र 24°00'-26°00' उत्तर से 78° 10'-81°30' पूर्व तक फैला हुआ है। इस क्षेत्र का कुल क्षेत्रफल 54,560 वर्ग कि0मी0 है। तथा इसकी जनसंख्या 1,83,53,044 है। राजनितिक रूप से इसमें उत्तर प्रदेश के के सात (07) जिले - चित्रकूट, बांदा, हमीरपुर, महोबा, झांसी, ललितपुर, जालौन एवं मध्य प्रदेश के छः (06) जिले - दतिया, टीकमगढ़, सागर,दमोह, छतरपुर एवं पन्ना सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त भिड़ जनपद की लाहर तहसील एवं ग्वालियर जनपद की भांडेर तहसील भी भौगोलिक रूप से बुदेलखंण्ड से ही सम्यता रखती है। नदी तंत्र के आधार पर बुंदेलखण्ड की सीमाए, उत्तर दिश में यमुना नदी, पश्चिम एवं पश्चिमोत्तर सीमा क्रमशः चंबल एवं सिंध नदिया तथा पूर्व में टोस नदी निर्धारण करती है।[1]

बुंदेलखण्ड़ का इतिहास आरम्भ से गौरवशाली रहा है। महाकाव्य काल से इस क्षेत्र के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है कि अगस्त मुनी इस वनाच्छादित क्षेत्र में आये एवं कालिंजर को अपनी तपस्थली बनायी। रामायण के अनुसार दण्डकारण्य क्षेत्र चित्रकूट से प्रारम्भ होता था तथा अयोध्या के भागवान राम यहॉ आके ठहरें थे। कालान्तर में ये क्षेत्र भगवान राम के अनुज भ्राता श्री शत्रुध्न के पुत्र शत्रुधाती के अधिकार में

था तथा इसकी राजधानी केन नदी के किनारे बसे कुशवती को बनाया। महाभारत काल में बुँदेलखण्ड़ क्षेत्र कई राज्यों में विभक्त हो गया था। जिसमें सर्वप्रमुख चेदि राज्य था।जिसका शासक शिशुपाल था तथा श्री कृष्ण द्वारा शिशुपाल का वध किया गया था।[2] बौद्धमूर्ति कला वस्तुतः बौद्ध धर्म की प्रचलित मान्यताओं, क्रमिक विकास व उसमें शामिल होती नवीन प्रवृतियों एवं बौद्ध धर्म में उदय नये सम्प्रदाय का द्योतक है। बुंदेलखण्ड़ क्षेत्र में बौद्ध मूर्तिकला का आरंभ मौर्यकाल में अशोक द्वारा स्थापित स्तंभ के शीर्ष से होता हैं। ये स्तंभ अशोक ने मुख्यतः बौद्ध के जीवन की घटना स्थलों एवं महत्वपूर्ण स्थानों पर स्थापित करवाये थें। मौर्य काल से लेकर शुग-सातवाहन काल तक का समय बौद्धमूर्तिकला के उद्धव व विकास की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण था। तत्कालीन समय में बौद्ध शिल्पकारों के मन में कुछ करने की दृढ़ इच्छा तो वहीं हीनयान मत की प्रधानता के कारण कई सैद्धांतिक विवशताएं भी थी। जिसमें बुद्ध प्रतिमा का निर्माण निषेद था। मौर्यकाल से सातवाहन तक की कला को आरम्भिक बौद्धमूर्ति कला के अंतर्गत रख सकते है। कुषाण काल से बुद्ध बोधिसत्व की मानव रूप में प्रतिमाएं निर्मित हुई, भक्ति और उपासना की प्रवृति बढ़ी। मौर्य के उपरांत विकसित शुंग सातवाहन कुषाण,गुप्त, चंदेल कलचुरी कालीन बौद्ध मूर्तिकला के दर्शन हमें बुँदेलखण्ड एवं उसके समीपस्थ क्षेत्र जैसे - छतरपुर,त्रिपुरी, दतिया, रीवा, सतना,पन्ना आदि स्थलों में विद्यवान मूर्तिकला से होते है।

तेवर(त्रिपुरी)- मध्य प्रदेश के जबलपुर में, जबलपुर से 12.8 किलो मीटर पश्चिम में, जबलपुर- भेड़ाघाट मार्ग पर तेवर नामक गॉव है। यहा 25°25’ उत्तरी अंक्षाश एवंम् 82°22‘ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। साधारणतः यह माना जाता है कि वर्तमान तेवर और उससे लगभग दो मील पश्चिम स्थित करनबेल प्राचीन त्रिपुरी के आधुनिक अवशेष है। परन्तु प्राचीन काल में त्रिपुरी का विस्तार इससे कही अधिक था और नर्मदा तट तक फैला हुआ क्षेत्र इसमें सम्मिलित था, चेदी देश का अंग माना जाता था। महाभारत काल में बुंदेलखण्ड़ क्षेत्र को कई राज्यों में विभक्त किया गया था, चेदि जिसका प्रमुख राज्य था। इस संबंध में ये उल्लेखनीय है कि केन नदी, जिसका समीकरण प्राचीन शुक्तिमती के साथ किया गया है। जिसके तट पर प्राचीन चेदि-राजधनी शुक्तिमती स्थित थी, का उद्गम जबलपुर जिले के उत्तरी भाग से हुआ है। कलचुरी नरेश विजय के क्र.सं. 944 (1193 ई.) रीवा अभिलेख में स्पष्ट कहा गया है कि त्रिपुरी नर्मदा तट पर स्थित हैं।3 त्रिपुरी में सागर विश्वविद्यलय के तत्वाधान में 1952-53 और 1966 से अब तक किये गये पुरातत्विक उत्खन्न से त्रिपुरी की प्राचीनता पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ा है। उत्खन्न से ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति के अवशेष प्राप्त हुए है जो मध्य प्रदेश के महेश्वर, नाबदाटोली, एरण इत्यादि स्थालों से ज्ञात ताम्रपाषाण संस्कृति की उत्तर कालीन रूप जान पड़ती है। लगभाग 1000ई. में त्रिपुरी में बसावत आरम्भ हो चुकी थी। ईसा पूर्व द्वितीय शती तक त्रिपुरी एक स्वतंत्र जनपद की राज्य की राजधानी बनी तथा इसके पश्चात कई शताब्दियों तक सातवाहन, शकक्षत्रप, तथा बोधियों के राज्य में समाष्टि रही। इस काल में राजनीतिक दृष्टि से इसका कोई विशेष महत्व नही था। त्रिपुरी को सबसे अधिक गौरव कलचुरी काल में प्राप्त हुआ। जब यह एक विशाल राज की राजधानी बनी।[4]

त्रिपुरी में बौद्ध धर्म का प्रचार था। 1952 के उत्खनन में सातवाहन कालीन स्तरों से ईट से भवनों के अवशेष प्राप्त हुए है। उत्खननकर्ता के अनुसार प्रथम ई.पू से लेकर द्वितीय ई. तक इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म लोकप्रिय था। सम्भवतः सातवाहन के पश्चात त्रिपुरी में बौद्ध धर्म का कुछ प्रचार हुआ। इस काल में त्रिपुरी में बोधिवंशी राजाओं का शासन था। जो सम्भवतः बौद्ध थें। उत्तर गुप्त कल में त्रिपुरी में बौद्व धर्म के प्रचलन का निश्चित प्रमाण उपलब्ध है। तेवर में किये गये उत्खनन से मृण्यमुद्रा प्राप्त हुई है। जिस पर उत्तर गुप्तकालीन ब्राहमी में ‘श्री नालन्दा महाविहारा चार्या भिक्षु सडघस्य‘ लेख उत्कीर्ण हैं।[5] इस मुद्रा के संबंध में यह अनुमान लगया जा सकता है कि त्रिपुरीवासी नालन्दा से ये मुद्रा लाये हो या किसी त्रिपुरीवासी को ये मुद्रा नालन्दा भिक्षसंघ द्वारा प्रदान की गई हो। कलचुरी काल में बौद्ध धर्म लोकप्रियता त्रिपुरी से प्राप्त बौद्ध प्रतिमों से स्पष्ट है। इस क्षेत्र से बुद्ध, बोधिसत्व वज्रपाणि एवं उनकी शक्ति की प्रतिमाएं प्राप्त होतीं हैं।

तेवर से प्राप्त भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध, को पद्मासन में बैठे हुये दाएं हाथ से भूमिस्पर्श करते हुये तथा बाएं हाथ को पर्यक बुद्ध पैरों के ऊपर रखे प्रदर्शित किया गया हैं। इस मुद्रा को वज्रासन भी कहा गया हैं। जिसका उल्लेख शाक्तानंद तरंगिणी में किया गया हैं।[6] बोधिसत्व वज्रपाणि जिनका बौद्ध धर्म में महत्वपूर्ण स्थान है। आरम्भ में बौद्ध धर्म में इन्हें सहायक देवता का स्थान प्राप्त था। जो गौतम बुद्ध के जन्म से ही सेवा करते थे। कालांन्तर में इन्हें ध्यानी बुद्ध अक्षोभ्य से उत्पन्न माना गया हैं। तेवर से प्राप्त बोधिसत्व की प्रतिमा चापयुक्त मेहराब के नीचे कमलासन पर बैठे प्रदर्शित है। इनके दोनों हाथों में धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा में है। इनके मुकुट में किसी ध्यानी बुद्ध की प्रतिमा नहीं है। परन्तु दो ध्यानी बुद्ध, दाएं ओर अभयमुद्रा में अमोद्यसिद्धि एवं बाएं ओर धर्मचक्र प्रर्वतन मुद्रा में बैरोचन की लघु प्रतिमा उत्कीर्ण है। उसके नीचे चवरधारी एक-एक परिचर है। कमलासन के नीचे मध्य में धर्मचक्र है। जिसके दोनों ओर एक-एक हिरण उछलते हुये अंकित है। प्रतिमा के नीचे बौद्ध मंत्र एवं एक दान अभिलेख ‘‘श्री वज्रपाणि महाबुद्ध साधुनामा..... महादान पति जीतदाम‘‘ है। जीतदाम दानदाता का नाम है।[7] कनिंघ महोदय ने अभिलेख के आधार वज्रपाणि की प्रतिमा माना है। तारा बौद्ध सम्प्रदाय में विभिन्न ध्यानी बुद्धों से उद्भत देवियों को तारा कहा गया है। साधनमाला के अनुसार तारा की उपासना व मंत्रपाठ से मानव दुखों से मुक्त होकर ऐर्श्यशाली व भाग्यशाली होता है। बौद्धकला में तारा की प्रतिमा सामान्यतः

दोहरे कमलासन में अर्धपर्यकासीन निर्मित की जाती हैं। जिनके बाएं हाथ में नाग पुष्प व दाएं हाथ वरदमुद्रा युक्त होता है। सिरोशीर्ष पर ध्यानी बुद्ध की प्रतिकृति एवं सहायक देवी देवताओं की उपस्थिति इनकी पहचान में सहायक होती है। वज्रयान सम्प्रदाय के विकास के साथ-साथ तारा देवियों में विभेद भी बढ़े है। इन्हें विभिन्न नामों से पुकारा गया है। इनके सौम्य व रौद्र दोनो प्रकार मिलतें है।[8]

छतरपुर- यह मध्य प्रदेश के सुदूर उत्तरी पूर्वी सीमा पर स्थित है। विश्व प्रसिद्ध खजुराहों मंदिर(चंदेल शासको द्वारा निर्मित) छतरपुर जिले में ही स्थित है। ये जिला सागर सम्भाग के अंतर्गत स्थित है तथा ये क्षेत्र 24°9‘ उत्तरी व 79°6‘ पूर्वी देशांतर पर स्थित है। छतरपुर की स्थापना 1785 में हुई थी इसका नाम बुंदेला राजपुत छत्रसाल(स्वतंत्रता सेनानी) के नाम पर रखा गया है। जो बंुदेलखण्ड की आजादी के स्थापक थे।पुरात्तव की दृष्टि से छतरपुर में स्थित खुजराहों के मंदिर अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जिनका निर्माण चंदेल शासकों द्वारा 950 ई.स 1050 ई. के मध्य करवाया। खुजराहों में हिन्द एवं जैन मंदिर स्थापत्य का अत्यन्त ही सुन्दर वास्तुशिल्प दृष्टिगौचर होता हैं। साथ ही छतरपुर जिले के अंतर्गत बौद्ध प्रतिमाओं का अंकन भी देखने को मिलता हैं, जिससे इस क्षेत्र अंतर्गत बौद्ध शिल्पांकन की प्रामाणिकता सिद्ध होती है।

बिलहरी(छतरपुर) से कल्चुरी कालीन भूमिस्पर्श मुद्रा में बुद्ध की दो प्रतिमाएं प्रतिवेदित हुई है। इन प्रतिमाओं की विशेषता कमल के मध्य वज्र का अंकन है। वज्र का अंकन बुद्ध की कठिन तप व संयम को दर्शाता है। बिलहरी(जबलपुर) से प्राप्त बुद्ध भूमिस्पर्श मुद्रा में (1.2×0.55×0.33मी) बुद्ध सप्त छत्र के नीचे शाक्य सिहों के अवलम्बित दोहरे पद्मपीठ पर बैठे है। बुद्ध के सिर पर घुंघराले बालों युक्त उष्णीष हैं। उनका बाएं हाथ संघाटी का छोर पकड़े गोद में है जबकि दाएं हाथ भूमिस्पर्श कर रहा है। सिर के पीछे कमल की पंखड़ियों से अलकृत प्रभामंडल हैं, इनके दाएं तरफ मैत्रेय नागपुष्प लिये खडे है तथा बाएं ओर जटाजुट धारी, पद्म लिये अवलोकितेश्वर खड़े है। छत्र के दोनों ओर मालाधारी गंधर्वो का अंकन हैं दोहरे पाठपीठ पर सामने की ओर अंजलि मुद्रा में उपासकों का अंकन है। पादपीठिका के नीचे बौद्ध मंत्र अभिलिखित हैं। यह प्रतिमा लगभग 11वी शती की है।[9] बिलहरी (छतरपुर) से बोधिसत्वों में अवलोकितेश्वर की प्रतिमा प्राप्त हुई है। जो बोधिसत्व में सबसे अधिक लोकप्रिय है। भारतीय बौद्धकला में बुद्ध के अतिरिक्त सर्वाधिक प्रतिमाए इन्ही के रूपों वाली निर्मित हुई है। जिसमें षड़क्षरी, लोकेश्वर, सिहंनाद, अवलोकेश्वर, खसर्पण, लोकनाथ, हलाहल, पद्म, नर्तेश्वर, हरिहरिहरिवाहनोंद्भव, रक्त लोकेश्वर, आदि है। बिलहरी(छतरपुर) से खसर्पण की प्रतिमा (0.7×0.5×0.35मी) प्राप्त हुई हैं। इसमें वे दोहरे पदमपीठिका पर ललितासन में बैठे हैं। वे बाएं हाथ में सनाल पद्म लिये तथा दाएं हाथ वरद्मुद्रा युक्त है। दोनों हाथ कलाइयों से खण्ड़ित है। इनके सिर पर जटाजुट धारण किये हुये हैं। हार बाजूबन्द, कमर मेखला व धोती पहने खसर्पण का प्रभामंडल अंडाकार है। पद्मपीठ के नीचे शाक्य सिंह प्रदर्शित हैं। देवता के दाएं ऊपर तारा अपने बाएं हाथ में सनाल पद्ल लिये दाएं हाथ वरद्मुद्रा में त्रिभंग मुद्रा में खड़ी हैं। उनके सिर के पास बाएं तरफ ध्यानी बुद्ध अक्षोभ्य भूमिस्पर्श मुद्रा में प्रदर्शित हैं। तारा के नीचे किरीट मुकुटधारी सुधनकुमार अपनी कुक्षि में पुस्तक दबाएं अंजलिमुद्रा में खड़े हैं। उनके नीचे एक अन्य देवता दाएं हाथ में सनाल पद्म लिये बैठे हैं। खसर्पण के बाएं तरफ चतुर्भुजी भृकुटि स्थांनक मुद्रा में दांये हाथों में अक्षमाला व वरदमुद्रा धारण किये है। जबकि बांये हाथ में त्रिदड़ी लिये है। परन्तु इनका बाएं हाथ खण्ड़ित है। तारा के सामने हयग्रीव वामन रूप में घटोदर, टेढी भौहों, मूछों सहित अपने दोनों हाथ दंड़ पर टिकायें खड़े हैं। खसर्पण के ऊपर मेहराव का अंलकरण है तथा दोनों तरफ गंधर्व युगल प्रदर्शित है। इस प्रतिमा की एक अन्य विशेषता ये है कि, खसर्पण के वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है जो सामान्यतः भारत से प्राप्त अन्य बौद्ध प्रतिमाओं में देखने को नहीं मिलता हैं।[10]

तारोद्धव कुरूकुल्ला- बिलहरी(छतरपुर) से तारा की प्रतिमा प्राप्त हुई हैं जिसकी पहचान डी.के. सिन्हा ने तारोद्धव कुरूकुल्ला से की है।11 इस प्रतिमा में देवी दोहरे कमलासन में वज्रपर्याकासन में आसीन है। चतुर्भुजी देवी के चारों हाथ खण्ड़ित है। दाएं ऊपरी हाथ उठा हुआ है। निचला दाएं हाथ यद्यपि खण्ड़ित हैं, परन्तु वह निश्चित रूप से वरदमुद्रा की ओर संकेत करता हैं। दोनो बाएं हाथ कोहनियों से खण्ड़ित है। परन्तु एक में नीलोत्पल रहा होगा जिसका अंकन अब तक अवशिष्ट है। देवी क सीरोशीर्ष पर खण्ड़ित ध्याली बुद्ध का अंकन है जो कि डी.के. सिन्हा के अनुसार ध्यानी बुद्ध अमिताभ की हैं। देवी कंठहार, केयूर, कमरधनी,बाजुबन्द,कटिमेखला,नुपूर आदि धारण किये है। परिकर में छः देवियों का अंकन है। जिसमें सबसे ऊपरी देवी बाएं कोने की नारी आकृति खण्ड़ित है। दाएं ओर दो आसन व एक स्थानक देवी का अंकन है जिसके हाथों के आयुध वर्तमान में स्पष्ट नहीं हैं। बाएं तरफ नीचे की नारी आकृति त्रिभंग मुद्रा में खड़ी दाएं हाथ में खड्ग व बाएं में धनुष लिये हैं। कमलासन के नीचे शाक्त सिंह व अंजलिमुद्रा में उपासक-उपासिका का अंकन है। नीचे पादपीठ पर बौद्धमंत्र अभिलिखित है। पुरालिपि के आधार पर यह प्रतिमा 10 वी शती ई. की मानी जा सकती हैं।

खजुराहो(छतरपुर), खजुराहो संग्रहालय में कमलासन पर बैठे बुद्ध (140×110×47सेमी.)की भूमिस्पर्श मुद्रा में प्रतिमा संग्रहित हैं। मूर्ति का बाएं माथा, नाक,हाथ की उंगलिया पैर व कुछ हिस्सा खण्डित हैं। अंडाकार चेहरा, लबे कर्ण, घुंघराले कुंचित केश युक्त उष्णीष, उन्नत वक्ष, क्षीणकटि, मासल भुजाए, लंबी भैहे, गले में गराड़ियों का प्रदर्शिन इस मूर्ति की शिल्पगत विशेषताएं है जो खजुराहों की उन्नत कला परम्परा से पूर्वगामी लगती है। सिर के पीछे पद्मपंखुडियों से अंलकृत खण्डित प्रभामण्डल है। बुद्ध बाएं हाथ से संघाटी का छोर पकड़े गोद में

रखे हैं। तथा दायें हाथ से भूमि का स्पर्श कर रहे है। पादपीठिका पर अंकित बौद्धमंत्र की लिपि के आधार पर कृष्णदेव ने इस प्रतिमा का काल 10 वी शताब्दी निर्धारित की है। [12]

निष्कर्षः-

बुंदेलखण्ड़ क्षेत्र में कला का अस्तित्व प्रागैतिहासिक काल से विद्यवान रहा है। कला, काल एवं स्थान के अनुरूप बदलती रहती है। बुंदेलखण्ड़ क्षेत्र की कला के अन्तर्गत प्रागैतिहासिक गुहा चित्र, बौद्ध, जैन मंदिर,मूर्तिशिल्प एवं शैव, वैष्णव सम्प्रदाय से संबंधित कलावशेष दृष्टिगत होते हैं। राजनीतिक रूप से इस क्षेत्र के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश के सात (07) जिले - चित्रकूट, बांदा, हमीरपुर, महोबा, झांसी, ललितपुर, जालौन एवं मध्य प्रदेश के छः (06) जिले - दतिया, टीकमगढ़, सागर,दमोह, छतरपुर एवं पन्ना सम्मिलित है। बुंदेलखण्ड़ क्षेत्र में लगभग 5वी शती ई.पू. के आस-पास नवीन कला केन्द्र विकसित हुआ। इनके विकास में बौद्ध धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका थी। बौद्ध धर्म काल गति अनुसार तीन मतों /शाखाओं में विभक्त हुआ। इस क्षेत्र के अन्तर्गत ई.पू.शताब्दियों से ही बौद्ध धर्म में हीनयान सम्प्रदाय की प्रधानता अनुसार बुद्ध के जीवन संबंधित चिन्ह मोक्ष प्राप्त के साधक के रूप में अपनाये गये। जिनके प्रमाण भरहुत, सांची, कोौशाम्बी, देउर कोठार आदि क्षेत्रों में विकासित बौद्ध स्थापत्य केन्द के अवलोकन से ज्ञात होता है। मौर्यकाल से सातवाहन तक की कला को आरम्भिक बौद्धमूर्ति कला के अंतर्गत रख सकते है। प्रथम शताब्दी ई. महायान शाखा के उदय के साथ ही कुषाण काल से बुद्ध बोधिसत्व की मानव रूप में प्रतिमाएं निर्मित हुई, भक्ति और उपासना की प्रवृति बढ़ी। 7 वी शती के आस-पास वज्रयान शाखा के उदय के साथ ही ध्यानी बुद्ध की कल्पना की गई साथ ही ध्यानी बुद्ध की शक्ति की अवधारण भी आई। कालान्तर में चंदेल एवं कलचुरी शासन कालीन बौद्ध मूर्तिकला के अंतर्गत बुंदेलखण्ड एवं उसके समीपस्त क्षेत्र में वज्रयान शाखा से संबंधित ध्यानी बुद्ध एवं उनकी शक्तियों के देविय रूपों का अंकन किया। जिनके प्रमाण हमे छतरपुर,त्रिपुरी, दतिया, रीवा, सतना,पन्न आदि स्थलों में देखने को मिलता है। बिलहरी(छतरपुर) से प्राप्त अवलोकितेश्वर (खसर्पण) के वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है जो सामान्य रूप से भारत से प्राप्त अन्य बौद्ध प्रतिमाओं में देखने को नहीं मिलता है। साथ ही इस क्षेत्र में तारा देवी अपने सामान्य रूप में ही प्रदर्शित की गई। तारा के जो विभेद पूर्वी भारत में मिलता है वह यहां नही है। यहॉ से प्राप्त तारा की प्रतिमा सौम्य रूप में है। सामान्यतः तारा के अंतिरिक्त मात्र तारोद्भव कुरूकुल्ला की मूर्ति इस क्षेत्र से प्रतिवेदित हुई है।

बुंदेलखण्ड का मानचित्र

उत्तर प्रदेश के सात (07) जिले - चित्रकूट, बांदा, हमीरपुर, महोबा, झांसी, ललितपुर, जालौन।

मध्य प्रदेश के छः (06) जिले - दतिया, टीकमगढ़, सागर,दमोह, छतरपुर एवं पन्ना सम्मिलित ह

चित्रफलक

1. भूमिस्पर्श मुद्रा बुद्ध, 10 शती बिलहरी (छतरपुर)

2.खसर्पण, पूर्वमध्य काल, बिलहरी(छतरपुर)

सन्दर्भ ग्रंथ

1.मौर्य, स्वामी राधा. 2018, बुन्देलखण्ड़ की कला में प्रतिबिम्ति समाजिक जीवन, अप्रकाशित शोध प्रबंध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय,इलाहाबाद-211002 उ.प्र. भारत, पृ.03।
2.मौर्य, स्वामी,राधा. पूर्वोक्त पृ.37।
3-शास्त्री अजय. इंड़िय ऐज सीन इन दि बृहत्संहिता ऑफ वराहमिहिर, पृ.114 बृहत्संहिता,14.9,।
4-शास्त्री, अजय. 2009, त्रिपुरी सम्पादक मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल, पृ.6-7।
5-शास्त्री, अजय. पूर्वोक्त पृ.109।
6- पाण्डेय ओम प्रकाश, 2000,सारनाथ की कला, भारती प्रकाशन, दुर्गा कुण्ड़ रोड़ धर्म संघ, वाराणसी पृ. 83।
7-बनर्जी आर.डी. 1901, द हैह्यात आफ त्रिपुरा एडं देयर मोनूमेंटस, में भाग-23, कोलकत्ता,पृ. 93-94,फलक 36।
8- मिराशी, वा.वि. 'कलचुरी नरेश और उनका काल' चित्र संख्या 10।
9- सिहं, डी.के. 1983, बुद्धिस्ट स्कल्पचर्स फ्राम बिलहारी,श्री निधि, पर्सपेक्टिव्ज, इन इण्डियन आर्कियालाजी आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर संपादक के.वी. रामन व अन्य, मद्रास, पृ.181-186,।
10- सिहं, डी.के. 1983, बुद्धिस्ट स्कल्पचर्स फ्राम बिलहारी , पूर्वोक्त पृ.182-183।
11- विनयतोष, भटटाचार्य- 1990 द इंड़ियन बुद्धिस्ट आइकोनोग्राफी, फर्म के.एल. मुखेपाध्याय, कलकत्ता पृ. 83।
12- देवकृष्ण, 1990, देम्पल्स ऑफ खजुराहों, भाग-1 नयी दिल्ली, पृ.390-391।